आर्डर-फार्म

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरी

हिन्दी प्रकाशन

H01 निर्मल धारा धर्म की *1995, पृष्ठ 138, रु. 110/-*
"धर्म न हिंदु है न बौद्ध, न मुस्लिम है न जैन, न सिक्ख है न ईसाई। धर्म सार्वजनीन है। इन्हीं प्रवचनों का संक्षिप्त संकलन इस पुस्तक में संगृहीत है।

H02 प्रवचन सारांश *1992, पृष्ठ 110, रु. 70/-*
"दस-दिवसीय शिविरों में पू. गुरुजी द्वारा दिये गये प्रवचनों का सारांश संकलन है।

H03 जागे पावन प्रेरणा *1994, पृष्ठ 226, रु. 140/-*
इस पुस्तक में पू. गुरुजी ने सरल तथा सुस्पष्ट ढंग से बुद्ध का जीवन और उनके उपदेशों का वर्णन किया है।

H04 जागे अन्तर्बोध *1994, पृष्ठ 190, रु. 110/-*
इस पुस्तक में बुद्ध की शिक्षा के हर पहलू का विस्तार से वर्णन किया गया है। सरल तरीके से वर्णन किया गया है ताकि इसे समझने में और जीवन में इसे उतारने में आसानी हो।

H05 धर्म: आदर्श जीवन का आधार *1996, पृष्ठ 94, रु. 65/-*
"इस पुस्तक में सरल तरीके से धर्म की व्याख्या की गयी है।

H10 धारण करे तो धर्म *1999, पृष्ठ 180, रु. 140/-*
"बुद्ध के जीवन से संबंधित तथा धर्म की व्याख्या करनेवाली प्रेरणादायक कहानियां।

H11 क्या बुद्ध दुःखवादी थे? *2000, पृष्ठ 88, रु. 75/-*
"बुद्ध दुःखवादी नहीं थे। उदाहरण के साथ विस्तार से इसे यहां समझाया गया है।

H12 मंगल जगे गृही जीवन में *2000, पृष्ठ 100, रु. 80/-*
बुद्ध की वाणी पर आधारित इस पुस्तक में यह समझाया है कि गृहस्थ गृही जीवन में कैसे सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

H13 धम्मवाणी संग्रह *2000, पृष्ठ 82, रु. 65/-*
विपश्यना (हिन्दी) पत्रिका से विषयवार मूल्यवान संग्रह। इस में पालि गाथाओं के साथ-साथ उनके हिन्दी अनुवाद भी हैं।

H14 विपश्यना पगोडा स्मारिका *2000, पृष्ठ 186, रु. 150/-*
"मुंबई के निकट बननेवाले विश्व विपश्यना पगोडा की नींव रखे जाने के शुभ अवसर पर लिखे गये पत्रों का संग्रह।

H15 सुत्तसार - 1 *2001, पृष्ठ 232, रु. 180/-*
"इसमें दीघनिकाय और मज्झिमनिकाय के सुत्तों का सार है।

H16 सुत्तसार - 2 *2001, पृष्ठ 204, रु. 110/-*
इसमें संयुत्तनिकाय के सुत्तों का सार है।

H17 सुत्तसार - 3 *2001, पृष्ठ 168, रु. 90/-*
इसमें अंगुत्तरनिकाय और खुद्दकनिकाय के सुत्तों का सार है।

H18 धन्यबाबा (आत्मकथन) *2002, पृष्ठ 130, रु. 58/-*
पूज्य गुरुजी के बचपन में अपने बाबा का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हीं बाबा के प्रति कृतज्ञता में लिखे उनके दोहे और उनके जीवन के रोमांचकारी संस्मरणों को इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

H19 कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का - व्यक्तित्व और कृतित्व, लेखक - श्री बाल कृष्ण गोयन्का *2002, पृष्ठ 120, रु. 65/-*
"पू. गुरुजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का तथा उनके द्वारा विश्व के कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का विस्तार से वर्णन है।

H20 पातंजल योगसूत्र, लेखक - सत्येन्द्रनाथ टंडन *2003, पृष्ठ 112, रु. 80/-*
"यह पुस्तक बुद्ध की शिक्षा के आलोक में योगसूत्रों की व्याख्या करती है। साथ ही दोनों में क्या समानताएं और क्या विशेषताएं हैं इनका भी गंभीरतापूर्वक अध्ययन करती है।

H21 आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय डॉ. ओम प्रकाश जी *2003, पृष्ठ 70, रु. 40/-*
डॉ. ओम प्रकाश स. ना. गोयन्का के पारिवारिक डॉक्टर तथा मित्र थे। इस पुस्तक में उनका जीवन चरित है। विपश्यना के प्रचार-प्रसार में उनके अभूतपूर्व योगदान तथा सादा जीवन साथ ही उनके विनोदी और नम्र स्वभाव, दूसरों के प्रति उनकी चिंता तथा दुःख के समय में उनका शांत रहने का स्वभाव का भी वर्णन है।

H22 राजधर्म *2003, पृष्ठ 84, रु. 45/-*
"इसमें यह भी वर्णित है कि राजा अशोक ने कैसे बुद्ध की शिक्षा से सीख लेकर आंतरिक तथा बाह्य शत्रुओं से रक्षा करने के लिए राष्ट्र को समृद्ध, सशक्त और शक्तिशाली बनाया जाय।

H23 आत्म-कथन भाग 1 *2003, पृष्ठ 112, रु. 55/-*
"यह पूज्य गुरुजी की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का सजीव वर्णन किया है। इसमें उनका कवि हृदय और स्वदेश प्रेम भी झलकता है।

H28 अंगुत्तर निकाय (हिन्दी अनुवाद) भाग-1 *2004, पृष्ठ 336, रु. 160/-*
"इस पुस्तक में एकक निपात से लेकर एकादशक निपात में एक से लेकर उत्तरोत्तर बढ़ते क्रम से ग्यारह धर्मों के संबंध में भगवान बुद्ध के उपदेश संगृहीत हैं।

H29 केंद्रीय कारागृह जयपुर, विपश्यना का प्रथम जेल शिविर *2005, पृष्ठ 92, रु. 50/-*
इसमें "जेलों में विपश्यना" का एक ऐतिहासिक पर्यवेक्षण, जेल-शिविर के बारे में किये गये शोधकार्य, शिविर में भाग लेनेवाले बंदियों में से हत्या के आरोप में बंद 24 बंदियों के अनुभव, बुद्धवाणी के संदर्भ में शिविरार्थियों के अनुभवों की समीक्षा मृत्युदंड प्राप्त कैदी विपश्यना के प्रभाव से प्रसन्न मुद्रा से फांसी के तख्ते पर चढ़ा, बुद्ध द्वारा अनुदेशित अड़तीस मंगल-धर्म, शिविर काल के चित्र इ. प्रस्तुत है।

H30 विपश्यना : लोकमत भाग-1 *2005, पृष्ठ 132, रु. 65/-*
"इसमें विपश्यना के बारे में "लोकमत" जानने के लिए विपश्यना शिविर में भाग लेने वाले साधकों-साधिकाओं के लेख एवं दस-दिवसीय शिविर के दसवें दिन निजी अनुभवों की जानकारी प्रस्तुत है।

H31 विपश्यना : लोकमत भाग-2 *2005, पृष्ठ 168, रु. 70/-*
"इसमें विपश्यना के बारे में "लोकमत" जानने के लिए विपश्यना शिविर में भाग लेने वाले साधकों-साधिकाओं के लेख एवं दस-दिवसीय शिविर के दसवें दिन निजी अनुभवों की जानकारी प्रस्तुत है।

H32 अग्रपाल राजवैद्य जीवक *2005, पृष्ठ 40, रु. 30/-*
"इस पुस्तक में बुद्धकालीन आयुर्वेद चिकित्सक जीवक का, जो श्रोतापन्न थे उनका जीवन वृत्तांत दिया हुआ है। जीवक भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुसंघ की चिकित्सा-सेवा करते थे।

H33 अहिंसा किसे कहें? *2006, पृष्ठ 32, रु. 30/-*
इस पुस्तक में विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का सार्वजनिक प्रवचन है।

H34 सम्राट अशोक के अभिलेख *2006, पृष्ठ 168, रु. 125/-*
"भारत तथा उससे बाहर के देशों में सम्राट अशोक के अभी तक 42 अभिलेख खोजे जा चुके हैं।

H35 प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन- परिचय *2006, पृष्ठ 28, रु. 30/-*
इस पुस्तक में विपश्यना ध्यान के प्रधान आचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का के जीवन की झांकियां प्रस्तुत की गयी हैं।

H36 गौतम बुद्धः जीवन-परिचय और शिक्षा *2006, पृष्ठ 36, रु. 50/-*
इस पुस्तक में महामानव बुद्ध का जीवन तथा उनकी शिक्षा वर्णित है। इसमें छह संगीतियों का भी वर्णन है।

H37 भगवान बुद्ध के महाश्रावक लकुण्डक भद्दिय *2006, पृष्ठ 16, रु. 35/-*
"इस पुस्तक में मधुर स्वर वाले भिक्षु श्रावकों में अग्र लकुण्डकभद्दिय की जीवनी संक्षेप में वर्णित है जो विपश्यी साधकों तथा साधिकाओं के लिए प्रेरणादायी है।

H38 धम्म-वंदना (पालि-हिन्दी) *2006, पृष्ठ 104, रु. 90/-*
इस पुस्तक में गोयन्काजी द्वारा हिन्दी भाषा में किये प्रातःकालीन वंदना का अनुवाद है। साधकों को यह पुस्तक उनके अर्थ समझने में सहायता करेगी।

H39 धम्मपद (पालि-हिन्दी) *2001, पृष्ठ 100, रु. 55/-*
"सुत्तपिटक का विभाजन पांच निकायों में जैसे– दीघ, मज्झिम, संयुत्त, अङ्गुत्तर और खुद्दक निकाय में हुआ। धम्मपद खुद्दकनिकाय का भाग है। यह पुस्तक धम्मपद का अनुवाद है। इसमें 26 वर्गों में 423 गाथाओं का संकलन है।

H40 महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा के साथ अनुवाद) *1996, पृष्ठ 140, रु. 90/-*
महासतिपट्ठानसुत्त में भगवान बुद्ध ने साधना के बारे में विस्तार से बताया है। यह पुस्तक इस सुत्त का अनुवाद है। साथ ही इसमें पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी दी गयी है।

H41 महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद) *1996, पृष्ठ 64, रु. 40/-*
महासतिपट्ठानसुत्त में भगवान बुद्ध ने साधना के बारे में विस्तार से बताया है। इस पुस्तक में महासतिपट्ठानसुत्त का अनुवाद है।

H42 भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा *2007, पृष्ठ 20, रु. 20/-*
"इस पुस्तक में बुद्ध के उपदेश वर्णित हैं जो विश्वजनीन होने के साथ-साथ असांप्रदायिक हैं। साथ ही इसमें बुद्ध की शिक्षा का सार विपश्यना ध्यान का आमुख भी है।

H43 तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-1 *2008, पृष्ठ 152, रु. 75/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

H44 तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-2 *2008, पृष्ठ 188, रु. 115/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

H45 तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-3 *2008, पृष्ठ 196, रु. 90/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

H46 तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-4 *2008, पृष्ठ 176, रु. 75/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

H47 तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-5 *2008, पृष्ठ 188, रु. 80/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

H48 तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-6 *2008, पृष्ठ 205, रु. 85/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

H50 क्या बुद्ध नास्तिक थे? *2008, पृष्ठ 228, रु. 100/-*
इस पुस्तक में नास्तिक शब्द का अर्थ दिया गया है और बुद्ध तथा बुद्धपूर्वकाल में इसका क्या अर्थ था यह भी दिखाया गया है। इस बात का भी यहां उल्लेख है कि बुद्ध को जीवनभर अनेक प्रकार की आलोचनाएं सुननी पड़ी, विशेष कर नास्तिक के रूप में।

H51 भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक महामोग्गल्लान *2008, पृष्ठ 104, रु. 50/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक "महामोग्गल्लान" के संक्षिप्त जीवनवृत्तांत का वर्णन है।

H52 महामानव बुद्ध की महान विद्या : विपश्यना का उद्गम और विकास *2009, पृष्ठ 260, रु. 625/-*
"इस पुस्तक का उद्देश्य विपश्यना ध्यान के बारे में संक्षेप में बताना है जो बुद्ध की शिक्षा का सार है। इसमें बुद्ध के जीवनवृत्त भी है, उन लोगों की कहानियां भी हैं जिन्होंने विपश्यना का अभ्यास कर लाभ प्राप्त किया।

H53 भगवान बुद्ध के महाश्रावक महाकस्सप *2009, पृष्ठ 68, रु. 45/-*
इस पुस्तक में इन महान विपश्यी साधक का जीवनवृत्त, बुद्ध के साथ उनके वार्तालाप और विपश्यना के प्रचार-प्रसार में इनका योगदान वर्णित है।

H54 मंगल हुआ प्रभात *1990, पृष्ठ 274, रु. 200/-*
पू. गुरुजी द्वारा प्रणीत दोहों का एक अमूल्य संग्रह। साधकों तथा अन्यों द्वारा प्रशंसित।

H55 महामानव बुद्ध की महान विद्या : विपश्यना का उद्गम और विकास *2010, पृष्ठ 136, रु. 210/-*
"इस पुस्तक का उद्देश्य विपश्यना ध्यान के बारे में संक्षेप में बताना है जो बुद्ध की शिक्षा का सार है। इसमें बुद्ध के जीवनवृत्त भी है, उन लोगों की कहानियां भी हैं जिन्होंने विपश्यना का अभ्यास कर लाभ प्राप्त किया। छः संगायनों का भी संक्षेप में वर्णन चित्रों के माध्यम से है, विपश्यना आचार्यों की श्रृंखला का भी वर्णन है।

H56 अनाथपिण्डिक *2010, पृष्ठ 112, रु. 50/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक "अनाथपिण्डिक"– दायकों (दान देने वाला) में अग्र के संक्षिप्त जीवनवृत्तांत का वर्णन है।

H57 किसागोतमी *2010, पृष्ठ 40, रु. 35/-*
"किसागोतमी" अपने प्यारे बच्चे की मृत्यु होने पर भगवान बुद्ध के पास आयी और भगवान की वाणी सुनकर नितांत दुःख-विमुक्ति के मार्ग पर प्रतिष्ठित हुई।

H58 चित्त गृहपति एवं हत्थक आळवक *2010, पृष्ठ 60, रु. 35/-*
इस पुस्तिक में बुद्ध में अपार श्रद्धा रखने वाले तथा उनके धर्मोपदेश से गहरे रूप से प्रभावित दो गृहस्थों की प्रेरणादायिनीं जीवनियां वर्णित हैं।

H59 खुशियों की राह *1993, पृष्ठ 40, रु. 225/-*
चित्रों के माध्यम से बच्चों को आनापान ध्यान की भावना सिखाने के लिए यह बड़ी ही उपयोगी पुस्तक है।

H60 प्रारंभिक पालि *2011, पृष्ठ 150 रु. 110/-*
यह पुस्तक पालि प्रवेशिका की तरह है जिसमें धीरे-धीरे पालि शब्दों की संख्या क्रमशः बढ़ाते हुए वाक्य विन्यास द्वारा व्याकरण पढ़ाया जाता है।

H61 प्रारंभिक पालि की कुंजी *2011, पृष्ठ 72, रु. 80/-*
"पालि प्राइमर में जितने भी अभ्यास हैं उनका उत्तर इस पुस्तक में है।

H62 विसाखा मिगारमाता *2011, पृष्ठ 76, रु. 45/-*
"इस पुस्तक में आदर्श नारी एवं भगवान बुद्ध में अत्यंत श्रद्धा रखने वाली, दान देनेवालियों में अग्र विसाखा मिगारमाता का जीवन वृत्तान्त तो है ही साथ ही आदर्श नारी के गुणों का भी वर्णन है।

H63 मगधराज सेनिय बिम्बिसार *2010, पृष्ठ 116, रु. 55/-*
"इस पुस्तक में उनका जीवनचरित, उनके शील बुद्ध के साथ उनके संवाद, दुसरों के जीवन पर उनका प्रभाव और विपश्यना के उनके प्रचार-प्रसार में उनके योगदान का वर्णन है।

H64 बुद्धसहस्सनामावली (पालि एवं हिंदी) *2010, पृष्ठ 70, रु. 35/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के हजार नामों की शृंखला पालि तथा हिन्दी भाषा में है। सभी नाम भगवान के गुणवाची हैं जिनका बोध हर विपश्यी साधक को होना चाहिए।

H65 भगवान बुद्ध के उपस्थाक आनन्द *2011, पृष्ठ 222, रु. 100/-*
"इस पुस्तक में उपस्थाक आनंद का जीवन चरित, धर्म के प्रसार में उनके कार्य तथा भिक्षुणी संघ की स्थापना में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान तथा शिक्षाओं को शुद्ध रूप में सुरक्षित रखने में उनके योगदान का वर्णन है।

H66 जीने की कला *2011, पृष्ठ 180, रु. 125/-*
"यह पुस्तक स. ना. गोयन्का के लेखों तथा प्रवचनों पर आधारित है। विपश्यना साधना की भूमिका देने के साथ-साथ यह भी बताती है कि कैसे इस तकनीक का प्रयोग समस्याओं को सुलझाने में किया जा सकता है, कैसे हम अपनी असामान्य अन्तःशक्ति का विकास कर सकते हैं

H67 परम तपस्वी श्री रामसिंह जी *2011, पृष्ठ 144, रु. 110/-*
"इस पुस्तक में एक वरिष्ठ आई. ए. एस. अधिकारी तथा विपश्यना के सहायक आचार्य रामसिंहजी के जीवनचरित और उदार प्रकृति का वर्णन है। कारागारों में विपश्यना के प्रयोग के वे प्रेरक शक्ति थे।

H68 भगवान बुद्ध की अग्रुपासिकाएं खुज्जुत्तरा एवं सामावती तथा उत्तरानन्दमाता *2011, पृष्ठ 44, रु. 35/-*
इस पुस्तक में बहुश्रुतों में अग्र खुज्जुत्तरा, मैत्रीविहार करने वालियों में अग्र सामावती तथा ध्यानियों में अग्र उत्तरानन्दमाता का जीवन संक्षेप में वर्णित है।

H69 तिक-पट्ठान (संक्षिप्त रूपरेखा) *2012, पृष्ठ 64, रु. 40/-*
इस छोटी-सी पुस्तक में तिकपट्ठान में विस्तार से व्याख्यायित 24 प्रत्ययों का संक्षेप में वर्णन है। इसमें मूल पालि उसका हिन्दी अनुवाद तथा उसकी समीक्षा दृष्टांतों के साथ दी गयी है।

H70 आदर्श दंपति नकुलपिता एवं नकुलमाता *2012, पृष्ठ 28, रु. 25/-*
इस पुस्तक में आदर्श दंपति नकुलपिता और नकुलमाता के जीवन चरित वर्णित हैं जिनको बुद्ध ने क्रमशः उपासक श्रावकों तथा उपासिका श्राविकाओं में विश्वस्त रूप से बातचीत करने वालों में अग्र की उपाधि दी।

H71 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 1 *2012, पृष्ठ 224, रु. 80/-*
"इस पुस्तक में जुलाई 1971 से जून 1974 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H72 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 2 *2012, पृष्ठ 208, रु. 75/-*
"इस पुस्तक में जुलाई 1974 से जून 1977 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H73 बाहिय दारुचीरिय एवं भद्दा कुण्डलकेसा *2013 पृष्ठ 44, रु. 30/-*
इस पुस्तक में क्षिप्र अभिज्ञा प्राप्त करने वाले भिक्षु श्रावकों में अग्र बाहिय दारुचीरिय तथा भिक्षुणी श्राविकाओं में अग्र भद्दा कुण्डलकेसा का जीवन संक्षेप में वर्णित है।

H74 राहुल एवं रट्ठपाल *2013 पृष्ठ 64, रु. 40/-*
"इस पुस्तक में शिक्षाकामी भिक्षु श्रावकों में अग्र राहुल तथा श्रद्धा से प्रव्रजितों में अग्र रट्ठपाल की जीवनी संक्षेप में वर्णित है जो विपश्यी साधकों तथा साधिकाओं के लिए प्रेरणादायी है।

H75 पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धम्मदिन्ना *2013 पृष्ठ 48, रु. 30/-*
धर्मकायिक भिक्षु श्रावकों में अग्र पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धर्मकथिका भिक्षुणी श्राविकाओं में अग्र धम्मदिन्ना का जीवन इस पुस्तिका में वर्णित है।

H76 भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक सारिपुत्त *2013, पृष्ठ 152, रु. 65/-*
इस पुस्तक में महाप्रज्ञावान भिक्षु श्रावकों में अग्र की उपाधि प्राप्त करने वाले सारिपुत्त की जीवनी संक्षेप में वर्णित है। ये कैसे बुद्ध के शिष्य बने– इसका भी यहां बड़ा ही रोचक वर्णन है।

H77 बरमा में लिखी गयी मेरी कविताएं *2013, पृष्ठ 196, रु. 300/-*
"इस पुस्तक में पू. गुरुजी द्वारा युवावस्था में अपनी मातृभूमि बरमा में हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा में लिखी गयीं कविताओं का संग्रह है।

H78 सोण कोळिविस एवं सोणा *2013 पृष्ठ 36, रु. 30/-*
"इस पुस्तक में दोनों अग्रों के जीवन वर्णित हैं। ये दोनों ही संकल्पित वीर्यों में अग्र थे। इस पुस्तक में बुद्ध द्वारा इन्हें जो निर्देश दिये गये हैं वे भी वर्णित हैं।

H79 भगवान बुद्ध के महाश्रावक आयुष्मान अनुरुद्ध *2014 पृष्ठ 48, रु. 55/-*
इस पुस्तक में भिक्षु-श्रावकों में दिव्यचक्षु वालों में अग्र अनुरुद्ध का जीवन-चरित वर्णित है।

H80 राहुलमाता (यशोधरा) *2014 पृष्ठ 48, रु. 35/-*
"इस पुस्तक में यशोधरा का जीवन चरित वर्णित है। साथ ही पूर्वजन्मों में सिद्धार्थ के साथ यात्रा तथा बहुजन हिताय विपश्यना के प्रसार में उसके योगदान का भी वर्णन है।

H81 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 3 *2014 पृष्ठ 172, रु. 74/-*

इस पुस्तक में जुलाई 1977 से जून 1980 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H82 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 4 *2014 पृष्ठ 200, रु. 84/-*
"इस पुस्तक में जुलाई 1980 से जून 1983 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H83 खेमा एवं उप्पलवण्णा *2014 पृष्ठ 48, रु. 30/-*
"इस पुस्तक में भिक्षुणी श्राविकाओं में अग्र– महाप्रज्ञावतियों में अग्र खेमा तथा ऋद्धिमतियों में अग्र उप्पलवण्णा का जीवन-चरित वर्णित है।

H84 पटाचारा एवं भद्दा कापिलानी *2014 पृष्ठ 44, रु. 30/-*
"इस पुस्तक में भिक्षुणी श्राविकाओं में विनयधारियों में अग्र पटाचारा तथा पूर्वजन्म स्मरण करने वालियों में अग्र भद्दा कपिलानी के जीवन-चरित का वर्णन है।

H85 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 5 *2015, पृष्ठ 206, रु. 80/-*
यह पुस्तक जुलाई 1983 से जून 1986 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H86 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 6 *2015, पृष्ठ 216, रु. 85/-*
यह पुस्तक जुलाई 1986 से जून 1989 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H87 आत्म-कथन भाग-2 *2016 पृष्ठ 192, रु. 100/-*
यह पुस्तक वस्तुत: गोयन्काजी की स्वाध्याय से स्वानुभूति की यात्रा का रेखा-चित्र प्रस्तुत करती है। रहीम तथा तुलसी के साहित्य से उनके गुरु कल्याणदत्त दुबे जी ने अमृत निकालकर उन्हें दिया।

H88 भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका महापजापति गोतमी
2015 पृष्ठ 44, रु. 30/-
"इस पुस्तक में भिक्षुणी श्राविकाओं में दीर्घकालीनों में अग्र महापजापति गोतमी का जीवन-चरित वर्णित है।

H89 चार महत्त्वपूर्ण लेख: लोक गुरु बुद्ध, देश की बाहय सुरक्षा, गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो!, शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ?
2016 पृष्ठ 60, रु. 60/-
इस पुस्तक में श्री सत्यनारायण गोयन्का द्वारा लिखित लोकगुरु बुद्ध, देश की बाह्य सुरक्षा, गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो!, शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ?, चार महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह है।

H90 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 7 *2016, पृष्ठ 252, रु. 100/-*
यह पुस्तक जुलाई 1989 से जून 1992 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H91 मेत्ताविहारिणी माताजी *2016, पृष्ठ 130, रु. 80/-*
"इस पुस्तक में धर्मयान का दुसरा चक्का सदा मौन और शांत रहकर पू. गुरुजी का साथ देने वाली, करुणा और शांति की दूत, सरलता एवं मातृत्व का मूर्त्त रूप श्रीमती इलायची देवी गोयन्का के बारे में साधिकाओं के विचार अंकित हैं।

H92 भगवान बुद्ध के महाश्रावक उपालि *2017, पृष्ठ 44, रु. 30/-*
"इस पुस्तक में भिक्षु-श्रावकों में विनयधरों में अग्र उपालि का जीवन-चरित वर्णित है।

H93 मगधनरेश वैदेहीपुत्र अजातशत्रु *2017, पृष्ठ 60, रु. 40/-*
इस पुस्तक में वैदेहीपुत्र अजातशत्रु का जीवनवृत्त, बुद्ध के संपर्क में आकर जीवन मे बदलाव और भगवान का धातु-सुरक्षा के लिए धातुनिधान बनने में इनका योगदान वर्णित है।

H94 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 8 *2017, पृष्ठ 256, रु. 110/-*
यह पुस्तक जुलाई 1992 से जून 1995 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H95 पातञ्जल योग: एक सार्वजनिक प्रवचन *2017, पृष्ठ 30, रु. 30/-*
इस पुस्तक में 1988 में जयपुर में हुए योग सम्मेलन में विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी द्वारा दिया गया एक सार्वजनिक प्रवचन है जिसमें योग और विपश्यना की समानता के बारे में विस्तार से बताया है।

H96 भगवान बुद्ध के श्रावक अञ्ञासिकोण्डञ्ञ
2017, पृष्ठ 32, रु. 30/-
"इस पुस्तक में भिक्षुश्रावकों में रात्रज्ञों में अग्र अञ्ञासिकोण्डञ्ञ की जीवनी संक्षेप में वर्णित है।

H97 सुखी हों *2017, पृष्ठ 84, रु. 130/-*
इस पुस्तक में गोयन्काजी के बहुआयामी व्यक्तित्व की झांकियां प्रस्तुत की गयी हैं। साथ ही सफल व्यापारी से वे कैसे प्रधान विपश्याचार्य बने– इस यात्रा का भी वर्णन है।

H98 कोसलराज पसेनदि (कोशलराज प्रसेनजित) *2018, पृष्ठ 104, रु. 55/-*
इस पुस्तक में कोशलराज प्रसेनजित का जन्म, उनकी कार्यकुशलता, बुद्ध, धर्म और संघ की निकटता तथा उनके जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन है।

H99 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 9 *2018, पृष्ठ 264, रु. 120/*
यह पुस्तक जुलाई 1995 से जून 1998 तक विपश्यना पत्रिका में गोयन्काजी तथा और साधकों के अपने अनुभव पर आधारित धर्म के बारे में लिखे गये लेखों का संग्रह है।

H100 भगवान बुद्ध के श्रावकमहाकप्पिन थेर *2018, पृष्ठ 24, रु. 30/-*
"इस पुस्तक में भिक्षओं को उपदेश करने वालों में अग्र महाकप्पिन थेर की जीवनी संक्षेप में वर्णित है। जो विपश्यी साधकों तथा साधिकाओं के लिए प्रेरणादायी है।

H101 सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 1 (अजिल्द) *2019, पृष्ठ 296, रु. 300/-*
सुत्तनिपात खुद्दकनिकाय का एक ग्रंथ है। इस पुस्तक मे कैसे मनुष्य का परम कल्याण हो सकता है। इस पर प्रभूत प्रकाश डाला गया है। इसमें शब्दों के अर्थ के साथ-साथ कथाएं भी दी गयी हैं।

H102 सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 1 (सजिल्द) *2019, पृष्ठ 296, रु. 450/-*
देखें सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग-1 (अजिल्द)

H103पूज्य गुरुजी एवं माताजी के बारे में साधकों के संस्मरण
2019, पृष्ठ 208, रु. 100/-
इस पुस्तक में उन साधक-साधिकाओं तथा गुरुजी एवं माताजी के साथ काम करने वाले लोगों के अनुभव हैं जिन्होंने उनसे विपश्यना सीख कर धर्म लाभ प्राप्त किया। पुस्तक के प्रारंभ में पूज्य गुरुजी की किशोर अवस्था की एक साहसिक एवं मार्मिक घटना का उन्हीं की की कलम से उल्लेख किया गया है।

H104 सयाजी ऊ बा खिन जर्नल *2020, पृष्ठ 312, रु. 270/-*
यह पुस्तक म्यंमा के उत्कृष्ट सरकारी सेवक तथा स. ना. गोयन्का के आचार्य सयाजी ऊ बा खिन के प्रति श्रद्धाजलि है। इसमें गुरुजी तथा माताजी इलायची देवी के विभिन्न अवसरों पर लिए गये साक्षात्कार भी हैं। गोयन्काजी द्वारा नियुक्त प्रमुख वरिष्ठ आचार्यों द्वारा धर्मपथ पर चलने की अपनी यात्रा का वर्णन है।

H105 स्वर्णजटित रत्न *2020, पृष्ठ 128, रु. 75/-*
इस पुस्तक में गोयन्काजी द्वारा पाठ किये गये बुद्ध वचनों का हिन्दी अनुवाद तथा उनके स्वरचित दोहे भी हैं। इस पुस्तक से विपश्यी साधकों को बुद्धवचन तथा गुरुजी के दोहों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी।

H106 घर-घर में पालि *2020, पृष्ठ 100, रु. 65/-*
इस पुस्तक में पालि भाषा के बारे में, तिपिटक के बारे में जिसमें बुद्ध की शिक्षा का सार सन्निहित है। विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा संचालित पालि पाठ्यक्रमों का ब्योरा तथा इनमें भाग लेने वाले कुछ चुने हुए साधक विद्यार्थियों के अनुभव वर्णित हैं।

H107 विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - 10 *2021, पृष्ठ 280, रु. 150/-*
इस पुस्तक में विपश्यना पत्रिका में छपे लेखों का ही संग्रह है। भूमिका है। इस भाग में जुलाई १९९८ से जून २००१ तक के लेख संगृहीत हैं।

H108 सरल पालि व्याकरण *2021, पृष्ठ 126, रु. 75/-*
विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रकाशित 'प्रारंभिक पालि' पुस्तक में पालि व्याकरण एवं 'प्रारंभिक पालि की कुंजी' में हर पाठ पर आधारित अभ्यास हैं। प्रारंभिक पाठों के उदाहरणों में हर संज्ञा की विभक्ति और वचन को दर्शाया गया है, जिससे हिंदी अनुवाद को समझने में सहायता होगी।

H110 कुमार कस्सप *2022, पृष्ठ 36, रु. 45/-*
इस पुस्तक में बुद्ध के कुशल वक्ता भिक्षु श्रावकों में अग्र 'कुमार कस्सप' जीवनचरित वर्णित है।

H111सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 2 (अजिल्द) *2022, पृष्ठ 490, रु. 590/-*
सुत्तनिपात खुद्दकनिकाय का एक ग्रंथ है। इस पुस्तक मे कैसे मनुष्य का परम कल्याण हो सकता है। इस पर प्रभूत प्रकाश डाला गया है। विपश्यना विशोधन विन्यास से अट्ठकथा साहित्य की हिन्दी में छपने वाली पुस्तकों में यह द्वितीय पुस्तक है।

H112 सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 2 (सजिल्द) *2022, पृष्ठ 490, रु. 890/-*
देखें सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग-2 (अजिल्द)

ENGLISH PUBLICATIONS

E01 Sayagyi U Ba Khin Journal *1991, 368 pages. Rs 385/-*
"This journal commemorates Sayagyi's exemplary life and teachings. It contains his discourses, biographical sketches of his life and the lives of the teachers who preceded him as well as articles on various aspects of Vipassana.

E02 Essence of Tipitaka *1995, 232 pages. Rs 255/-*
A concise guide to the voluminous teachings of the Buddha contained in the Pali Canon.

E03 The Art of Living *1988, 176 pages. Rs 110/-*
A full-length study of the teaching of Vipassana useful both for meditators and non-meditators alike.

E04 The Discourse Summaries *1987, 100 pages. Rs 115/-*
"Summaries of the evening discourses by S. N. Goenka given during a 10-day course of Vipassana.

E05 Healing the Healer *1991, 32 pages. Rs 40/-*
It describes the benefit of Vipassana to those who are serving in the medical profession.

E06 Come People of the World *1989, 48 pages. Rs 50/-*
Translations of selected Hindi couplets from Goenkaji's chantings.

E07 Gotama the Buddha: His Life & His Teaching
1992, 44 pages. Rs 75/-
"A brief sketch of the life and teaching of the Buddha and a description of the six historical Councils.

E08 The Gracious Flow of Dharm *1994, 80 pages. Rs 65/-*
"Condensed from three-day public talks of S. N. Goenka explaining the true meaning of Dhamma (Dharma in Sanskrit), which has now been mistakenly used to refer to 'sect' or 'sectarianism'.

E09 Discourses on Satipatthana Sutta
1999, 136 pages. Rs 100/-
"Evening discourses by S.N. Goenka during the 8-day course of meditation during which he expounds the Mahasatipatthana Sutta.

E10 The Wheel Of Dhamma Rotates (New)
2012, 368 pages. Rs 850/-
A concise informative compilation on the Vipassana Centres in India and around the world with pictures.

E11 Vipassana Its Relevance to the Present World
1994, 152 pages. Rs 165/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. in New Delhi in April 1994. The papers focus on Vipassana's impact in the fields of education, prison reforms, improved management in business and Government.

E12 Dharm - Its True Nature *1995 86 pages. Rs 200/-*
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhamma Giri, Igatpuri in May 1995.

E13 Vipassana - Addictions & Health, 1989
1990, 88 pages. Rs 155/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhammagiri, Igatpuri in 1989. It focuses on the beneficial effects of Vipassana on drug addicts and general health.

E14 The Importance of Vedana & Sampajanna, 1990
1990, 136 pages. Rs 165/-
This covers the important topic of the Buddha's teaching 'Vedana and Sampajanna' in great detail.

E16 Pagoda Seminar, Oct. 1997 *1998, 140 pages. Rs 80/-*
The papers presented at the time of the foundation-stone laying ceremony of the Grand Vipassana Stupa being built near Mumbai.

E17 A Re-appraisal of Patanjali's Yoga-Sutras
1995, 138 pages. Rs 155/-
"Patanjali, the author of Yoga Sutras wrote his scholarly works a few centuries after the Buddha, and has drawn heavily from the teachings of the Buddha.

E18 The Manuals Of Dhamma *1999, 296 pages. Rs.310/-*
"This book contains the English translations of Venerable Ledi Sayadaw's authoritative essays on the essence of Buddha's teachings.

E19 Was the Buddha a Pessimist ? *2001, 76 pages. Rs 65/-*
The Buddha was not a pessimist. This is explained in detail with examples.

E20 Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates
1995, 60 pages. Rs 90/-
Vipassana has been adopted as a prison reform technique in the largest jail in India, the Tihar Jail. The book gives detailed report of the scientific studies carried out to assess the impact of Vipassana meditation on the prisoner's mental health.

E21 Effect of Vipassana Meditation on Quality of Life
2002, 64 pages. Rs 100/-
"Research analysis and relevant statistics are covered in this study by Dr. Amulya Khurana and Prof. P. L. Dhar

E22 For the Benefit of Many *2002, 208 pages. Rs 220/-*
This book contains a valuable compilation of Goenkaji's talks and question-answer sessions.

E23 Manual of Vipassana Meditation (U Ko Lay)
2002, 132 pages. Rs 95/-
This book throws light on the scientific aspect of the Buddha's Teaching.

E24 Realising Change *2003, 248 pages. Rs 245/-*
This book featuring accounts by Vipassana practitioners leading everyday lives, aims to make Vipassana both better known and more clearly understood.

E25 The Clock of Vipassana Has Struck
2003, 248 pages. Rs 150/-
This volume celebrates Sayagyi U Ba Khin's exemplary life. It contains a collection of his writings and discourses, a biological sketch of his life and the lives of the teachers who preceded him, and is woven together with an extensive interview with his reknowned disciple, S. N.Goenka.

E26 Meditation Now: Inner Peace Through Inner Wisdom
2003, 128 pages. Rs 125/-
"A collection of articles by Goenkaji commemorating his tour of North America in 2002 including The Universal Message of Peace (Millennium World Peace Summit, New York), The Meaning of Happiness (World Economic Forum, Davos, Switzerland) etc.

E27 S. N. Goenka at the United Nations
2003, 20 Pages, Rs. 55/-
Talks given by Goenkaji at United Nations on a) The Universal Dhamma. b) The subject which put the teaching of the historical Buddha in a modern perspective.

E32 The Caravan of Dhamma *2004, 192 pages, Rs. 110/-*
"Diary of S. N. Goenka's 'Meditation Now' Tour of Europe and North America, April 10 to August 15, 2002.

E33 The Gem Set in Gold *2006, 128 pages, Rs. 150/-*
"It is an English translation of all the Pali and Hindi chantings in the ten-day Vipassana course and includes glossary of Pali words.

E34 Peace Within Oneself for Peace in the World
1998, 24 pages, Rs. 50/-
In this booklet Sri S.N. Goenka shows that unless one has peace within oneself there can be no peace in the world.

E35 Mahasatipatthana Sutta (Pali - English)
1985, 112 pages. Rs 120/-
An annotated translation of 'Mahasatipatthana Sutta', the primary discourse in which the Buddha described the practice

of meditation in detail.

E36 Pali Primer (Pali - Grammar) *1994, 164 pages. Rs 130/-*
A guide to learn the Pali language.

E37 Key to Pali Primer (Pali - Grammar)
1998, 80 pages. Rs 65/-
"Gives answers to the test questions in 'Pali Primer" An aid in learning

E38 The Buddha's Non-Sectarian Teaching
2007, 24 Pages, Rs. 40/-
Deals with this book the Buddha's practical teaching of Vipassana Which is not only universal but also absolutely non-sectarian this technique of meditation is for all irrespective of casts, creed, religion, ethnic group and nationality.

E39 Acharya S. N. Goenka: An Introduction
2007, 24 Pages, Rs. 40/-
This book gives a brief life sketch of Acharya Satyanarayan Goenka and the honours he received from various countries.

E40 Value Inculcation Through Self-Observation
2007, 72 Pages, Rs. 60/-
"This book contains a detailed analysis on how Vipassana can play a beneficial role in the betterment of the current education system.

E42 Pilgrimage to the Sacred Land of Dhamma
2009, 150 pages, Rs. 1250/-
This book is a collection of beautiful photographs that were taken during several pilgrimages to Myanmara led by Acarya Satyanarayan Goenka. Besides an introduction to vipassana and an article on the significance of Pagoda it also has several other articles by Sri Satyanarayan Goenka.

E43 An Ancient Path *2009, 180 pages, Rs. 190/-*
This book by Paul R. Fleishman is a collection of talks given to different audiences in different countries.

E44 Vipassana Meditation and the Scientific World View
2010, 36 pages, Rs. 40/-
This covers the Important topic of Awareness of the meaning of the rising and passing of body sensations. it is established as the meditative gateway to the experience of reality, as defined both by the Buddha, and by the scientific world-view.

E45 The Path of Joy *1993, 42 pages, Rs. 200/-*
It is a very useful book for teaching Ānāpān to the children through picture.

E46 The Great Buddha`s Noble Teaching`s (OSV) Small
2011, 136 Pages, Rs. 285/-
The purpose of this book is to give a introduction about Vipassana meditation, quintessence of the Buddha's teaching. It also contains information on life of the Buddha, stories of the people who benefitted from the practice of Vipassana meditation.

E47 Vipassana Meditation & its Relevance to the World (Cofee Table) *2011, 156 pages, Rs. 800/-*
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. in New Delhi in April 1994. The papers focus on Vipassana's impact in the fields of education, prison reforms, improved management in business and Government.

E48 The Great Buddha`s Noble Teaching`s (OSV) H.B. Big
2011, 256 Pages, Rs. 750/-
The purpose of this book is to give a brief introduction about Vipassana meditation, quintessence of the Buddha's teaching. It also contains information on life of the Buddha, stories of the people who benefitted from the practice of Vipassana meditation, six historical Councils, chain of teachers after the Buddha and spread of Vipassana through pictorial presentation.

E49 Chronicles Of Dhamma *2012, Pages 264, Rs. 260/-*
'Chronicles of Dhamma' presents a selection of articles published in Vipassana Newsletters over the years. They are organized in broad thematic groups: such as 'Vipassana Teachings'; 'Messenger of Dhamma'; 'In the Footsteps of the Buddha'; 'Applied Dhamma'; and 'The Spread of Dhamma'.

E50 Views On Vipassana *2015, 96 Pages, Rs. 70/-*
The seven articles are in this book i.e. What Senior Administrators say about Vipassana, What Muslims say about Vipassana, What Christians say about Vipassana, Vipassana in Government, Vipassana: An Art of Corporate Management, Drug addiction and therapy: A Vipassana Perspective and Vipassana in Prisons.

E51 Be Happy! *2015, 80 Pages, Rs. 320/-*
The Life Story of Meditation Teacher S. N. Goenka.

E52 Three Important Papers: Defence Against External Invasion, How to Defend the Republic, Why was the Sakyan Republic Destroyed *2016, 48 Pages, Rs. 40/-*
The three well researched papers by Goenkaji deal with how to defend external invasion, how to defend the republic as also how to deal with the causes that led to the destruction of the Sakyan republic.

E53 Newsletter Collections Part 1 *2016, Pages 152, Rs. 95/-*
It contains selected articles written by Guruji and other meditators for the Vipassana Newsletter between July 1990 and Oct 1993. It also contains an account of Goenkaji's visit to Sri Lanka and his 1991 world tour.

E54 Newsletter Colletions Part 2 *2016, Pages 180, Rs.120/-*
It contains selected writings of Goenkaji and other meditators like Paul Fleishman that appeared in Vipassana Newsletter between Jan. 1994 and Dec. 1997.

E55 Newsletter Colletions Part 3 *2016, Pages 184, Rs.115/-*
It contains selected writings of Goenkaji and other meditators that appeared in Vipassana Newsletter between Jan. 1998 to Dec. 1999.

E56 Newsletter Colletions Part 4 *2017, Pages 208, Rs.140/-*
It contains selected writings of Goenkaji and other meditators that appeared in Vipassana Newsletter between Jan. 2002 to Dec. 2003.

E57 Dhamma Treasures (Living a Life Of Dhamma)
2019, Pages 344, Rs. 350/-
"Dhamma Treasures is a series of books containing primarily Goenkaji's articles/discourses on various aspects of Vipassana coupled with questions & answers and inspirational examples of senior meditators.
"Living a Life of Dhamma" is a first book in this series guiding students on how to apply Vipassana in daily life.

E58 The Buddha as Depicted in the Tipitaka Vol.-1
2019, Pages 344, Rs. 350/-
"Mr. S. N. Goenka, Principal Teacher of Vipassana meditation, faced some initial hesitation before joining his first Vipassana course due to indoctrination about the Buddha's teachings received by him since his childhood.
In the words of Mr. Goenka, "The Tipitaka is like a vast, captivating garden containing beautiful flowers of different hues and fragrances. I have plucked a few flowers from that garden and have woven them into a garland.

E59 Newsletter Colletions Part -5 *2019, Pages 224, Rs.160/-*
It contains selected writings of Goenkaji and other meditators that appeared in Vipassana Newsletter between Jan. 2000 to Dec. 2001.

E60 The Buddha as Depicted in the Tipitaka Vol.-2
2019, Pages 344, Rs. 420/-
"Mr. S. N. Goenka, Principal Teacher of Vipassana meditation, faced some initial hesitation before joining his first Vipassana course due to indoctrination about the Buddha's teachings received by him since his childhood.
In the words of Mr. Goenka, "The Tipitaka is like a vast, captivating garden containing beautiful flowers of different hues and fragrances.

E61 Kathāsallāpasikkhā [Exercises in Pāli Conversation]
2021, Pages 180, Rs. 240/-

मराठी प्रकाशन

M01 जगण्याची कला *1992, पृष्ठ 194, रु.100/-*
हे पुस्तक विल्यम हार्ट यांच्या "आर्ट ऑफ लिव्हींग" या पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यात साधक व इतर सर्वाच्या उपयोगात येईल अशा विपश्यना साधनेबद्दल संपूर्ण माहीती दिलेली आहे.

M02 जागे पावन प्रेरणा *1994, पृष्ठ 226, रु. 90/-*
हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यामध्ये गोयन्काजींचे काही लेख दिलेले आहेत ज्यात सोप्या व सुबोध भाषेत बुद्धांचे जीवन व त्यांच्या शिकवणुकी वर प्रकाशझोत टाकलेला आहे.

M03 प्रवचन सारांश *1998, पृष्ठ 104, रु. 45/-*
या पुस्तकात दहा-दिवसीय शिबिरातील गोयन्काजींच्या प्रवचनांचा सारांश दिलेला आहे.

M04 धर्म: आदर्श जीवनाचा आधार *2007, पृष्ठ 104, रु. 50/-*
"हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यात धर्म काय आहे, हे सोप्या व समजण्यासारख्या पद्धतीने सांगितलेले आहे.

M05 जागे अंतर्बोध *2001, पृष्ठ 180, रु. 65/-*
हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. हा जागे पावन प्रेरणा पुस्तकात दिलेल्या माहितीचा पुढचा भाग आहे आणि यात बुद्धांच्या शिकवणुकीवर खोलवर प्रकाशझोत टाकलेला आहे.

M06 निर्मळ धारा धर्माची *2004, पृष्ठ 124, रु. 75/-*
"या पुस्तकात श्री. स. ना गोयन्काजींनी हैद्राबाद येथे २२ ते २४ जुलै १९९३ ला दिलेल्या तीन भाषणांचा संग्रह आहे. या भाषणात गोयन्काजींनी शुद्ध धर्माची व्याख्या सांगितलेली आहे. आजकाल धर्म शुद्ध रुपात राहिला नसून सांप्रदायिक झाला आहे जसे हिंदु धर्म, जैन धर्म इत्यादी.

M07 महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा) *2006, पृष्ठ 80, रु. 65/-*
महासतिपट्ठानसुत्त भगवान बुद्धांनी साधनेच्या बाबतीत विस्तारपूर्वक सांगितले आहे. तसेच यामध्ये पारिभाषिक शब्दांची व्याख्या दिलेली आहे.

M08 महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद) *2006, पृष्ठ 80, रु. 45/-*
महासतिपट्ठानसुत्त भगवान बुद्धांनी साधनेच्या बाबतीत विस्तारपूर्वक सांगितले आहे. या पुस्तकात महासतिपट्ठानसुत्ताचे अनुवाद आहे.

M09 मंगलमय गृहस्थ जीवन *2006, पृष्ठ 100, रु. 40/-*
बुद्धवाणीवर आधारित या पुस्तकात हे समजवुन सांगितले आहे की गृहस्थ गृही जीवनात कशाप्रकारे सामंजस्य स्थापित करू शकतो.

M10 भगवान बुद्धाची सांप्रदायिकता-विहिन शिकवणुक
2008, पृष्ठ 20, रु. 25/-
या पुस्तकात बुद्धांचे उपदेशांचे वर्णन आहे, जे संपूर्ण विश्वासाठी असून असांप्रदायिक आहेत. त्यासोबतच यात बुद्धांच्या शिकवणुकीचे सार - विपश्यना ध्यान याबाबत माहितीही आहे.

M11 बुद्धजीवन-चित्रावली *2008, पृष्ठ 76, रु. 330/-*
"बुद्धजीवन-चित्रावली" चे संक्षिप्त वर्णन या पुस्तकात आहे.

M12 आनंदाच्या वाटेवर *1993 पृष्ठ 48, रु. 150/-*
हे पुस्तक लहान मुलांसाठी लिहीले आहे. ह्या पुस्तकात थोडक्यात लहान मुलांसाठी असणाऱ्या "आनापान शिबिराची" माहिती दिलेली आहे.

M13 आत्म-कथन भाग-1 *2010 पृष्ठ 128, रु. 65/-*
ही पुज्य गुरुजींची आत्मकथा आहे, ज्यात त्यांनी आपल्या आध्यात्मिक यात्रेचे वर्णन केलेले आहे. यात त्यांचे कवी हृदय आणि स्वदेश प्रेम झळकते.

M14 अग्रपाल राजवैद्य जीवक *2010 पृष्ठ 30, रु. 35/-*
"या पुस्तकात बुद्धकालीन आयुर्वेद जीवक जे श्रोतापन्न होते त्यांचा जीवन वृतांत दिला आहे. जीवक भगवान बुद्ध आणि त्यांच्या भिक्षुसंघाची चिकित्सा-सेवा करीत होते.

M15 महामानव बुद्धाची महान विद्या विपश्यना: उगम आणि विकास
2011, पृष्ठ 136, रु. 190/-
"इस पुस्तक का उद्देश्य विपश्यना ध्यान के बारे में संक्षेप में बताना है जो बुद्ध की शिक्षा का सार है। इसमें बुद्ध के जीवनवृत्त भी है, उन लोगों की कहानियां भी हैं जिन्होंने विपश्यना का अभ्यास कर लाभ प्राप्त किया।

M16 लोकगुरु बुद्ध *2011, पृष्ठ 12, रु. 10/-*
या पुस्तकात भगवान बुद्धांची शिक्षा गृहस्थ आणि भिक्षु सगळ्यांसाठी समान होती याचे वर्णन आहे।

M17 लकुण्डक भद्दिय *2011, पृष्ठ 16, रु. 12/-*
"इस पुस्तक में मधुर स्वर वाले भिक्षु श्रावकों में अग्र लकुण्डकभद्दिय की जीवनी संक्षेप में वर्णित है जो विपश्यी साधकों तथा साधिकाओं के लिए प्रेरणादायी है।

M18 प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का यांचा संक्षिप्त जीवन-परिचय *2011, पृष्ठ 32, रु. 30/-*
या पुस्तकात विपश्यना ध्यानाचे प्रधान आचार्य श्री सत्य नारायण गोयन्काजींच्या जीवनाची रुपरेखा प्रस्तुत केली गेली आहे. त्यासोबतच त्यांच्या विपश्यना ध्यानाच्या प्रेरक यात्रेचेही वर्णन आहे.

M19 भगवान बुद्धांची अग्रश्राविका किसागोतमी *2013, पृष्ठ 40, रु. 30/-*
"किसागोतमी" अपने प्यारे बच्चे की मृत्यु होने पर भगवान बुद्ध के पास आयी और भगवान की वाणी सुनकर नितांत दु:ख-विमुक्ति के मार्ग पर प्रतिष्ठित हुई ।

M20 भगवान बुद्धांची अग्रउपासिका विसाखा मिगारमाता
2013, पृष्ठ 80, रु. 40/-
या पुस्तकात दान देण्यात अग्र या बुद्ध शिष्येचे जीवन चरित्र वर्णित आहे. त्यासोबतच यात आदर्श कन्या, सून व गृहस्थांकरता कुशल काय आहे - या विषयांवर बुद्धांचे उपदेशही आहेत.

M21 भगवान बुद्धांचे अग्रउपासक अनाथपिण्डिक *2013, पृष्ठ 112, रु. 55/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक "अनाथपिण्डिक"– दायकों (दान देने वाला) में अग्र के संक्षिप्त जीवनवृत्तांत का वर्णन है ।

M22 भगवान बुद्धांचे अग्रउपासक चित्त गृहपति व हत्थक आळवक
2013, पृष्ठ 60, रु. 30/-
इस पुस्तिक में बुद्ध में अपार श्रद्धा रखने वाले तथा उनके धर्मोपदेश से गहरे रूप से प्रभावित दो गृहस्थों की प्रेरणादायिनीं जीवनियां वर्णित हैं।

M23 धम्मपद (पाली-मराठी) *2013, पृष्ठ 104, रु. 50/-*
"पाली वाङ:मयात (लिपिटकात) बुद्धांचे अमूल्य उपदेश संग्रहित आहेत. लिपिटकाचा अर्थ तीन पेटारे आहेत, जे विनय पिटक, सुत्त पिटक व अभिधम्म पिटक म्हणवले जातात. सुत्त पिटकाचे विभाजन दीघ, मज्झिम, संयुक्त, अंगुत्तर व खुद्दक निकायात झाले आहे. धम्मपद खुद्दकनिकायाचा भाग आहे. हे पुस्तक धम्मपदाचा अनुवाद आहे.

M24 मगधराज सेनिय बिम्बिसार *2014, पृष्ठ 120, रु. 50/-*
"इस पुस्तक में उनका जीवनचरित, उनके शील बुद्ध के साथ उनके संवाद, दुसरों के जीवन पर उनका प्रभाव और विपश्यना के उनके प्रचार-प्रसार में उनके योगदान का वर्णन है।

M25 महामानव बुद्धाची महान विद्या विपश्यना: उगम आणि विकास
2015, पृष्ठ 260, रु. 525/-
"इस पुस्तक का उद्देश्य विपश्यना ध्यान के बारे में संक्षेप में बताना है जो बुद्ध की शिक्षा का सार है। इसमें बुद्ध के जीवनवृत्त भी है, उन लोगों की कहानियां भी हैं जिन्होंने विपश्यना का अभ्यास कर लाभ प्राप्त किया। छः संगायनों का भी संक्षेप में वर्णन चित्रों के माध्यम से है, विपश्यना आचार्यों की शृंखला का भी वर्णन है।

M26 प्रारंभिक पाली *2015, पृष्ठ 156, रु. 65/-*
"हे पुस्तक प्रारंभिक पालीपासून हळूहळू पाली शब्दांचे ज्ञान वाढवत वाक्य रचनेद्वारे व्याकरणाचेही ज्ञान देते. पाली शिकणाऱ्या नवीन विद्यार्थ्यांना हे पुस्तक पाली भाषेचा परिचय करुन देते.

M27 प्रारंभिक पालीची कुंजी *2015, पृष्ठ 80, रु. 40/-*
"वि.वि.वि. द्वारे प्रकाशित प्रारंभिक पालीचा हा दुसरा भाग आहे. ज्याच्यात पाली भाषेच्या विषयी आधारभूत आमुख आहे. प्रारंभिक पालीमध्ये जेवढे अभ्यास आहेत त्यांची उत्तर या पुस्तकामध्ये आहेत.

M28 भगवान बुद्धांचे महाश्रावक महाकस्सप (धुतांगधारींत "अग्र")
2015, पृष्ठ 64, रु. 35/-
इस पुस्तक में इन महान विपश्यी साधक का जीवनवृत्त, बुद्ध के साथ उनके वार्तालाप और विपश्यना के प्रचार-प्रसार में इनका योगदान वर्णित है।

M29 काय बुद्ध दु:खवादी होते? *2015, पृष्ठ 88, रु. 70/-*
"बुद्ध दु:खवादी नहीं थे। उदाहरण के साथ विस्तार से इसे यहां समझाया गया है।

M30 भगवान बुद्धांचे अग्रश्रावकमहामोग्गल्लान *2015, पृष्ठ 100, रु. 45/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक "महामोग्गल्लान" के संक्षिप्त जीवनवृत्तांत का वर्णन है ।

M31 धन्य बाबा! *2017, पृष्ठ 134, रु. 55/-*
पूज्य गुरुजी के बचपन में अपने बाबा का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हीं बाबा के प्रति कृतज्ञता में लिखे उनके दोहे और उनके जीवन के रोमांचकारी संस्मरणों को इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

M32 आदर्श दंपती नकुलपिता व नकुलमाता *2017, पृष्ठ 28, रु. 25/-*
इस पुस्तक में आदर्श दंपति नकुलपिता और नकुलमाता के जीवन चरित वर्णित हैं जिनको बुद्ध ने क्रमश: उपासक श्रावकों तथा उपासिका श्राविकाओं में विश्वस्त रूप से बातचीत करने वालों में अग्र की उपाधि दी।

M33 खेमा एवं उप्पलवण्णा *2018, पृष्ठ 40, रु. 30/-*
या पुस्तकात भिक्षुणी श्राविकात महाप्रज्ञावतीमध्ये अग्र खेमा आणि ऋद्धीमतीमध्ये अग्र उप्पलवण्णा यांच्या जीवनचरित्राचे वर्णन आहे.

M34 राहुल एवं रठ्ठपाल *2018, पृष्ठ 64, रु. 40/-*
"या पुस्तकात बुद्धांच्या दोन अग्रश्रावकांच्या जीवनाबाबत माहिती आहे– राहुल अणि रठ्ठपाल

M35 सुखी व्हा! *2019 पृष्ठ 80, रु. 115/-*
"या पुस्तकात गोयन्काजींच्या बहुआयामी व्यक्तित्वाची रुपरेषा प्रस्तुत केली गेली आहे. तसेच यशस्वी उद्योजकापासून ते कसे प्रधान विपश्यनाचार्य बनले, या यात्रेचे वर्णनही आहे.

M36 राहुलमाता (यशोधरा) *2019 पृष्ठ 40, रु. 30/-*
या पुस्तकात यशोधरेचे जीवन चरित्र वर्णित आहे. त्या सोबतच पूर्वजन्मात सिद्धार्थासह यात्रा व बहुजन हिताय विपश्यनेच्या प्रसारात तिच्या योगदानाचे वर्णनही यात आहे.

M37 भगवान बुद्धांचे सेवक आनन्द (उपस्थाक)
2019, पृष्ठ 216, रु. 90/-
"या पुस्तकात त्यांचे जीवन चरित्र, धर्माच्या प्रसारात त्यांचे कार्य, भिक्षुणी संघाच्या स्थापनेत त्यांचे महत्त्वपूर्ण योगदान तसेच बुद्ध शिकवणुकीला शुद्ध रूपात सुरक्षित ठेवण्यात त्यांचे योगदान यांचे वर्णन आहे.

M38 बाहिय दारुचीरिय आणि भद्दा कुण्डलकेसा *2019, पृष्ठ 32, रु. 30/-*
"या पुस्तकात बुद्धांच्या दोन महान अग्रश्रावकांच्या जीवनाबाबत माहिती आहे - बाहिय दारुचीरिय व भद्दा कुंडलकेसा.

M39 पटाचारा आणि भद्दा कापिलानी *2021, पृष्ठ 36, रु. 40/-*
या पुस्तकांत विनय धारण करणाऱ्यांमध्ये अग्र असलेली पटाचारा तसेच पूर्व जन्मांचे अनुस्मरण करणाऱ्यांमध्ये अग्र असलेली भद्दा कापिलानी बुद्धांच्या स्त्री शिष्यांमध्ये अग्रणी होत्या. या दोन्ही अग्र– श्राविकांचे जीवन-चरित्र, त्यांचा गृहस्थ जीवनातील संघर्ष, त्यांचे दु:खातून सुखी होणे तसेच विवशतेवर विजय प्राप्त करण्याची कहाणी वर्णन केली आहे.

M40 आत्म-कथन भाग - २ *2021, पृष्ठ 192, रु. 110/-*
या दुसऱ्या भागात गोयंकाजींनी अशा व्यक्तींचे जीवन-चरित्र लिहिले आहे ज्यांचा त्यांच्या जीवनावर खूप प्रभाव पडला.

M41 सोण कोळिविस आणि सोणा *2021, पृष्ठ 24, रु. 35/-*
या पुस्तकात दोन्ही अग्रांच्या जीवनाचे वर्णन केलेआहे. हे दोघेही संकल्पित वीर्यामध्ये अग्र होते. या पुस्तकांत बुद्धांद्वारा त्यांना दिलेल्या निर्देशांचेही वर्णन आहे.

M42 राजधर्म *2003, पृष्ठ 90, रु. 70/-*
यह तिपिटक और इतिहास पर आधारित एक ऐसी शोधपरक पुस्तक है जो न केवल राजधर्म के गुणों को अपना कर आचरण सुधारने की प्रेरणा देती है।

M43 पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धम्मदिन्ना *2022, पृष्ठ 40, रु. 45/-*
पुण्ण मंताणिपुत्त व धम्मदिन्ना. बुद्धांनी दोघांनाही धार्मिक उपदेश देणाऱ्यांमध्ये अग्रची उपाधी दिली होती. या पुस्तकात त्यांचे जीवन चरित्र दिले आहे.

M44 भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक सारिपुत्त *2022, पृष्ठ 144, रु. 100/-*
या पुस्तकात या महान विपश्यी साधकांच्या मुक्तीच्या शोधाच्या यात्रेचे वर्णन आहे. सारिपुत्त महाप्रज्ञावानांमध्ये अग्र होते आणि विपश्यनेच्या प्रचार-प्रसारामध्ये त्यांचे योगदान असाधारण होते.

Gujrati Publications

G01 प्रवचन सारांश *1995, पृष्ठ 84, रु. 60/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "प्रवचन सारांश"

G02 विपश्यना शा माटे? (पुस्तिका) *पृष्ठ 8, रु. 2/-*
इस लघु पुस्तिका मे विपश्यना साधना के द्वारा मन को शांत व संतुलित रखकर स्वयं भी सुख-शांतिपूर्वक जीएं तथा औरों को भी सुख-शांतिपूर्वक जीने दें इसके बारे में समझाया है तथा विपश्यना-साधना शिविर की भी जानकारी दी है।

G03 धर्म: आदर्श जीवननो आधार *2004, पृष्ठ 120, रु. 70/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "धर्म: आदर्श जीवन का आधार"

G04 महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद सहित) *2001, पृष्ठ 58, रु. 75/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "महासतिपट्ठानसुत्त भाषानुवाद"।

G05 जागे अंतर्बोध *2001, पृष्ठ 206, रु. 140/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "जागे अन्तर्बोध"

G06 धारण करे तो धर्म *2001, पृष्ठ 192, रु. 80/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "धारण करे तो धर्म"

G07 जागे पावन प्रेरणा *2004, पृष्ठ 222, रु. 105/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "जागे पावन प्रेरणा"

G08 क्या बुद्ध दु:खवादी थे? *2004, पृष्ठ 76, रु. 55/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "क्या बुद्ध दु:खवादी थे"

G09 निर्मल धारा धर्म की *2004, पृष्ठ 160, रु. 70/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "निर्मल धारा धर्म की"

G10 मंगल जगे गृही जीवन में *2004, पृष्ठ 112, रु. 55/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "मंगल जगे गृही जीवन में"

G11 बुद्धजीवन-चित्रावली *2008, पृष्ठ 72, रु. 330/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "बुद्धजीवन-चित्रावली"

G12 लोक गुरु बुद्ध *2008, पृष्ठ 16, रु. 15/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "लोक गुरु बुद्ध"

G13 भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा *2010, पृष्ठ 20, रु. 35/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा"

G14 सम्राट अशोक के अभिलेख *2012, पृष्ठ 176, रु. 75/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "सम्राट अशोक के अभिलेख"

G15 खुशियों की राह *2015, पृष्ठ 40, रु. 150/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "खुशियों की राह"

G16 आत्म-कथन भाग-1 *2018, Pages 120, रु. 60/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "आत्म-कथन भाग-1"

G17 राजधर्म *2018, पृष्ठ 80, रु. 55/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "राजधर्म"

G18 पातञ्जल योग: एक सार्वजनिक प्रवचन
2018, Pages 32, रु. 30/-
देखें हिन्दी पुस्तक "पातञ्जल योग: एक सार्वजनिक प्रवचन"

G19 जीने की कला *2021, पृष्ठ 256, रु. 195/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "जीने की कला"

G20 आत्म-कथन भाग-2 *2022 पृष्ठ 196, रु. 160/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "आत्म-कथन भाग-2"

Bengali Publications

B01 प्रवचन सारांश *2007, 136 pages, Rs. 65/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "प्रवचन सारांश"

B02 Dharam: Adarsh Jivan ka Adhar *2008, 124 pages, Rs. 60/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "धर्म: आदर्श जीवन का आधार"

B03 महासतिपट्ठानसुत्त *2011, 200 pages. Rs 90/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "महासतिपट्ठानसुत्त भाषानुवाद"।

Punjabi Publications

P01 धर्म: आदर्श जीवन का आधार *2012, पृष्ठ 114, रु. 50/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "धर्म: आदर्श जीवन का आधार"

P02 निर्मल धारा धर्म की *2012, पृष्ठ 168, रु. 70/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "निर्मल धारा धर्म की"

P03 मंगल जगे गृही जीवन में *2014, पृष्ठ 112, रु. 50/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "मंगल जगे गृही जीवन में"

P04 किसागोतमी *2014, पृष्ठ 40, रु. 30/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "किसागोतमी"

Rajasthani Publications

R02 जागो लोगां जगत रा *1988, पृष्ठ 260, रु. 45/-*
पू. गुरुजी द्वारा प्रणीत दोहों का एक अमूल्य संग्रह। साधकों तथा अन्यों द्वारा प्रशंसित।

R03 परिभाषा धरम री *2006, पृष्ठ 36, रु. 10/-*
इस पुस्तक में पूज्य गुरुजी द्वारा अपनी मातृभाषा में दिया गया एक सार्वजनिक धर्म प्रवचन है।

Malayalam Publications

Mal01 Pravachan-Saransh *2008, 110 pages, Rs. 45/-*
See English Book "The Discourse Summaries"

Mal02 The Gracious Flow of Dharm *2010, 104 Pages, Rs. 60/-*
See English Book "The Gracious Flow of Dharm"

Mal03 Mahasatipatthana Sutta
2021, 176 pages. Rs 165/-
See English Book "Mahasatipatthana Sutta"

Tamil Publications

T01 The Art of Living by William Hart *2003, 180 pages. Rs 135/-*
See English Book "The Art of Living by William Hart"

T02 The Discourse Summaries *2005, 108 pages Rs. 60/-*
See English Book "The Discourse Summaries"

T03 The Gracious Flow of Dhamma *2005, 100 pages Rs. 55/-*
See English Book "The Gracious Flow of Dharm"

Telugu Publications

TL01 Mangal Jage Grihi Jivan Men *2007, 120 pages, Rs. 55/-*
It is explained in this book, based on the teaching of the Buddha, how harmony can be established in the house holder's life.

Urdu Publications

Ur01 जीने का हुनर *2009, पृष्ठ 218, रु. 75/-*
देखें हिन्दी पुस्तक "जीने की कला"

Others Publications

OT01 The Global Pagoda Souvenir 29 Oct.2006 (English & Hindi) *2006, 286 pages, Rs. 60/-*
This souvenir brought oct in 2006 contains several very important articles, one being the excerpts of Goenkaji's message to meditators in the one-day course at the Globla Pagoda on oct 1, 2006 the first ever course within the completed main dome.

OT02 विश्व विपश्यना स्तूप का संदेश (हिंदी, मराठी, अंग्रेजी)
2009, पृष्ठ 32, रु. 35/-
इस पुस्तक में विश्व विपश्यना स्तूप (ग्लोबल पगोडा) का संदेश विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी ने गाथाओं के माध्यम से दिया है।

OT03 The Path of Joy (German) *1993, 44 pages, Rs. 300/-*
See english Book "The Path of Joy".

OT04 The Path of Joy (Italian) *1993, 44 pages, Rs. 300/-*
See english Book "The Path of Joy".

Portuguese Publications

Por01 The Path of Joy *2013, 48 pages, Rs. 300/-*
See english Book "The Path of Joy".

Duch Publications

Du01 The Path of Joy *1993, 48 pages, Rs. 300/-*
ISee english Book "The Path of Joy".

French Publications

F01 Gotama the Buddha : His Life and His Teaching
2004, 58 pages, Rs. 50/-
See english Book "Gotama the Buddha : His Life and His Teaching".

F02 Meditation Now: Inner Peace Through Inner Wisdom
2004, 152 pages, Rs 80/-
See English Book "Meditation Now: Inner Peace Through Inner Wisdom".

F03 Path Of Joy *1993, 48 pages, Rs. 300/-*
See English Book "The Path of Joy".

F04 Pour Le Bien Du Plus Grand Nombre (French) (For the Benefit of Many) *2011, 208 pages, Rs. 235/-*
See English Book "For the Benefit of Many".

F05 The Discourse Summaries *2016, 128 pages, Rs. 105/-*
See english Book "The Discourse Summaries ".

F06 Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta
2016, 140 pages, Rs. 115/-
See english Book "Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta ".

F07 Mahāsatipaṭṭhāna Sutta *2016, 116 pages,Rs. 100/-*
See english Book "Discourses on Mahāsatipaṭṭhāna Sutta ".

F08 The Clock of Vipassana Has Struck
2016, 264 pages, Rs. 210/-
See english Book "The Clock of Vipassana Has Struck ".

F09 Come People of the World *2015, 32 pages, Rs 50/-*
See english Book "Come People of the World ".

F10 Soyez Heureux (Be Happy) *2018, 84 Pages, Rs. 275/-*
See english Book "Be Happy".

Spanish Publications

SP01 Para Beneficio De Muchos (For the Benefit of Many)
2006, 344 pages, Rs. 190/-
See english Book "(For the Benefit of Many)".

SP02 El arte de vivir (The Art of Living)
2009, 238 pages. Rs 130/-
See english Book "The Art of Living ".

SP03 The Path of Joy *1993, 40 pages, Rs. 300/-*
See english Book "The Path of Joy".

Pali Verses by Shri S. N. Goenka (Books)

BU01 बुद्धसहस्सनामावली (पालि) *1998, पृष्ठ 64, रु. 15/-*
Mr. S. N. Goenka-ji creativity in composing verses in Hindi and Rajasthani arose and along with it arose the Dhamma inspiration to compose verses in Pali. Thus he has written Buddha's name in Pali verses. There are thousand name of the Buddha.

BU02 Buddhasahassanamavali (Roman), (Myanmar), (Thai), (Sri Lankan), (Mongolian), *1998, 64 pages. Rs 15/-*
Mr. S. N. Goenka-ji creativity in composing verses in Hindi and Rajasthani arose and along with it arose the Dhamma inspiration to compose verses in Pali. Thus he has written Buddha's name in Pali verses. There are thousand name of the Buddha.

BU08 Buddhagunagathavali (Devanagari, Roman, Myanmar)
1999, 170 pages. Rs 30/-
Mr. S. N. Goenkaji has written Buddha's qualities in Pali verses. He has honoured the Buddha, in great reverence, by composing one thousand verses, extolling the many attributes, virtues of the Buddha. For easy and felicitous recitation, each stanza is composed of four lines, each line being made up of eight words.